सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

स्वमान - मैं ज्ञानयुक्त-योगयुक्त-युक्तियुक्त बोल द्वारा सेवा करने वाली आत्मा हूँ।

प्रथम शिव भगवानुवाच -''सबके मुख के बोल में अविनाशी भव का वरदान हो। आप ब्राह्मणों का हर बोल मोती है। बोल नहीं हो लेकिन मोती हो। जैसे मोतियों की वर्षा हो रही है, बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। इसको कहा जाता है मधुरता। ऐसा बोल बोलें जो सुनने वाले सोचें कि ऐसा बोल हम भी बोलेंगे। सबको सुनकर सीखने की प्रेरणा मिले, फॉलो करने की प्रेरणा मिले। जो भी बोल निकले वह ऐसे हों जो कोई टेप करके फिर रिपीट करके सुने। अच्छी बात लगती है, तब तो टेप करते हैं ना जो बार-बार सुनते रहें। ऐसे मधुर बोल के वायब्रेशन्स विश्व में स्वत: ही फैलते हैं। यह वायुमण्डल वायब्रेशन्स को स्वत: ही खींचता है। तो आपका हर बोल महान हो। ब्राह्मण आत्माओं के बोल में सिद्ध होने की शक्ति है इसलिए हर आत्मा के प्रति हमारे बोल वरदानी व शुभ भावना से युक्त हों। वाक्य नहीं महावाक्य बन जाएं। महावाक्य विस्तार के नहीं होते। जैसे वृक्ष के अंदर बीज महान है और उसका विस्तार नहीं होता है लेकिन उसमें सारा 'सार' होता है, ऐसे ही महावाक्य में विस्तार नहीं होता, किन्तु उसमें सार होता है, क्या ऐसे सारयुक्त, युक्तियुक्त, योग-युक्त, शक्ति-युक्त, स्नेह-युक्त, स्वमान-युक्त और स्मृति-युक्त बोल बोलते हो? आपको यह भी चेक करना है कि मेरे द्वारा जो भी बोल निकलते हैं, क्या वह सर्व के व स्वयं के प्रति कल्याणकारी हैं? व्यर्थ की तो बात ही छोड़ दो। अभी की स्टेज अनुसार ऐसा कोई भी शब्द मुख से नहीं निकलना चाहिए जिसमें कल्याण का कार्य समाया हुआ न हो। आपके हर बोल के महत्व का यादगार भक्ति में भी भक्त लोग 'सत्य वचन महाराज' कहते हैं।

योग का प्रयोग - सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा बाबा के लाइट आकारी अव्यक्त देह में महाज्योति को अनुभव करें....बापदादा से शक्तिशाली किरणें मुझ फरिश्ते पर पड़ रही है....सम्पूर्ण ज्ञान का दिव्य प्रकाश मुझे प्राप्त हो रहा है....बाबा मुझे वरदान दे रहे हैं कि मधुर व वरदानी वाणी से सम्पन्न बनो....बाबा से सहनशीलता का वरदान भी प्राप्त हो रहा है.....बाबा शक्ति दे रहे हैं और बोल का आवेश व कटुता समाप्त होती जा रही है...हर परिस्थिति में, बोल में मधुरता व शांति का वरदान प्राप्त हो रहा है....

मनन-चिन्तन - शुभभावना के बोल ही दिल को छूते हैं....मधुरता के बोल से ही आत्माएं संतुष्ट हो सकती हैं...तो चिन्तन करें कि हर परिस्थिति में हम कैसे अपने बोल को श्रेष्ठ बना सकते हैं...बोल से महाभारत भी हो सकती है और बोल से शांति व प्रेम का वातावरण भी निर्मित हो सकता है...बोल के महत्व को कैसे बढ़ाएं....?

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - जैसे अगर माइक ठीक न हो तो आवाज यथार्थ नहीं आती और अच्छा भी नहीं लगता। यन्त्र में जरा भी खिट-खिट है तो ऐसी आवाज भी पसंद नहीं करते। ऐसे ही हमारा यन्त्र, मुख भी माइक है। इस मुख द्वारा भी जब कभी यथार्थ व युक्ति-युक्त बोल नहीं निकलते हैं, तो उसी समय सबको क्या अनुभव होता होगा, समझ सकते हैं। जब स्थूल यंत्र का आवाज भी पसंद नहीं करते तो नैचुरल मुख द्वारा निकला हुआ बोल व आवाज स्वयं को भी और सर्व को भी ऐसे ही अनुभव होना चाहिए। इस घड़ी से सदाकाल के लिए व्यर्थ बोल, विस्तार करने के बोल, समय व्यर्थ करने के बोल, अपनी कमजोरियों द्वारा अन्य आत्माओं को संगदोष में लाने वाले बोल सब समाप्त हो जायें। जितना कम बोलेंगे उतना ही बोल में समर्थी आएगी। सही समय पर बोले गये सही बोल कमाल करते हैं। याद का बल भी जितना बढ़ेगा, बोल में शक्ति भरेगी। ज्ञान रत्नों से सम्पन्न आत्मा को स्थूल धन की कभी कमी नहीं होगी। दिन-प्रतिदिन नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जो महारथी व महावीर बन रहे हैं, उन्हीं के मुख से निकलने वाले हर बोल सत्य हो जाएंगे। अभी नहीं होते हैं, क्योंकि अभी तक व्यर्थ और साधारण बोल ज्यादा निकलते हैं।

अपने श्रेष्ठ कर्म द्वारा गुणों का दान करने वाली आत्मा हूँ।

द्वितीय शिव भगवानुवाच -

''बापदादा के मुरब्बी बच्चों के हर कर्म की रेखा से अनेकों के कर्मों की रेखा बदलती है। तो हर कर्म की रेखा से अनेकों की तकदीर की लकीर खींची। चलना अर्थात तकदीर खींचना। तो जहाँ-जहाँ जाते हैं अपने कर्मों की कलम से अनेकों की तकदीर की लकीरें खीचते जाते। तो कदम अर्थात कर्म ही मुरब्बी बच्चों के तकदीर की लकीर खींचने की सेवा के निमित्त बनी। कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। अनन्य बच्चों का हर कर्म श्रेष्ठ होता है। उनमें विशेषता यह होती है कि उनके हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन भी है कि 'जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सब करेंगे'। ऐसे उनके हर कर्म अनेक आत्माओं को एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जाएंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको कहा जाता है - समर्थ कर्म। ऐसे कर्म वाला सदा स्वयं से संतुष्ट होगा और हर्षित होगा।

मनन-चिन्तन - कर्म, आत्मा का दर्शन कराने वाला दर्पण है। श्रेष्ठ कर्म ही यदि ऊँच तकदीर बनाने का आधार है तो कर्मों में श्रेष्ठता कैसे लाएं? सदा किन महावाक्यों को सामने रखें जो कर्म पर अटेन्शन हो? ब्रह्मा बाबा एवं दादियों ने कैसे निमित्त, निर्माण व निरहंकारी होकर कर्म करना सिखाया है, इस पर विचान सागर मंथन करें।

योगाभ्यास - सूक्ष्म वतन में बापदादा को सतगुरु के रूप में सम्मुख रख महान व श्रेष्ठ कर्म करने की समझ व शक्ति ले रहे हैं..बापदादा को दिन भर में बीच-बीच में एवं रात को सोने से पहले धर्मराज के रुप में सम्मुख रख अपना पोतामेल देते रहें..बापदादा के सम्मुख प्रतिज्ञा को दोहराएं कि संगमयुग में कोई भी ऐसा कर्म हमसे नहीं होगा जो ब्राह्मण कुलभूषण के योग्य नहीं है..

व्यवहार में - ना खुद को देह समझकर व्यवहार में आएं और न दूसरों को देह समझकर व्यवहार में आएं, हम शुद्ध करनहार आत्मा हैं, करनकरावनहार बाबा है।

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - हर पल कर्म हो रहा है..हर पल हमारा जन्म-जन्म का भाग्य बन रहा है या बिगड़ रहा है..संगमयुग की विलक्षण घड़ियां यूं ही न बीत रही हों इसका पूरा-पूरा अटेन्शन रहे..जैसे सीमा पर दुश्मनों के सम्मुख खड़ा फौजी सजग व सतर्क रहता है उसी प्रकार हम तीव्र पुरुषार्थियों के लिए यह कर्मक्षेत्र ही युद्ध स्थल है और हमें हर पल सजग व सतर्क रह माया दुश्मन के वार को पहले से ही समझकर विफल कर देना है, विघ्न आने ही नहीं देना है।

सिकर। नवनिर्मित ज्ञान शिखर भवन का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए जिला अध्यक्ष पवन मोदी, ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. पूनम, तथा ब्र.कु. पुष्पा।

सेन्धवा-म.प्र.। 'तनावमुक्ति से तन्दरूस्ती' द्वीदिवसीय शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. गिरीश पटेल, ब्र.कु.किरण, रघुवंश पब्लिक स्कूल के चेयरमेन डॉ. बाबूलाल रघुवंशी, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष पीरचन्द मित्तल, ब्र.कु.प्रकाश, ब्र.कु.छाया तथा अन्य प्रतिष्ठित जन।

वडगाव-महा.। सरपंच मेले में विधायक डॉ. सुजीत मिणयेकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वैशाली। साथ हैं कृषिभूषण विश्वनाथ पाटिल, बालासाहेब तथा ब्र.कु.रानी।

बेलौरी-नेपाल। कंचनपुर उद्योग वाणिज्य संघ अध्यक्ष टेक बहादुर सावद तथा दिपेन्द्र कुंवर, सशक्त प्रहरी नागरिक अध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पार्वती। साथ हैं ब्र.कु.शुभ्रा तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। गणपति उत्सव के उपलक्ष्य पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.भानु।

इटावा-उ.प्र.। श्री श्री 108 खड़ेश्वरी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलम व ब्र.कु.प्रीति।

दिल्ली-मजलिस पार्क। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रियों के साथ समूह चित्र में निगम पार्षद नीलम बुद्धिराजा, समाजसेवी रोशन लाल कंसल, ग्रुप मैनेजर बहनें तथा ब्र.कु.राजकुमारी।